[DRAFT]

Shweta Srivastava
Primary School Jaitawardeeh, Block Suraon, District Prayagraj, Uttar Pradesh
Email id: shwetasrivastava0510@gmail.com

Abstract

Children studying in this school belong to socio-economically disadvanataged families, comprising of labourers, farmers, potters etc. In addition, 70% children in the school are from the scheduled caste community. In the present context where small children are most vulnerable in terms of sexual harassment and news is flooded with all kinds of heinous crime against children, this initiative was begun by the name of “Good touch, Bad touch”- discussed the issue of child abuse with fellow teachers, so that it can be communicated in a fearless and easy to understand language, differentiated between good, bad and secret touch - making students aware of various forms of harassment, use of dolls to explain in detail, during workshops, insisted that students must assert their right to say NO when approached in a “secret” manner and developed a learning Corner for students where students read books. She used story telling as a powerful medium to communicate educational and socially relevant messages, have been accorded voice space in class 7 Hindi textbook (QR code).

शाला का सन्दर्भ : सामाजिक-आर्थिक सन्दर्भ

विद्यालय शहर से 12 किलोमीटर और नगर क्षेत्र सीमा से मात्र 05 किलोमीटर की दूरी पर है। आर्थिक व सामाजिक रूप से पिछड़े मजदूर वर्ग समुदाय के बच्चे विद्यालय में नामांकित है, जिन्हें निम्न आय होने के कारण प्रतिदिन आपनी आजीविका के लिए संघर्ष

करना पड़ता है। समुदाय में मुख्यतः बोलचाल में स्थानीय बोली का प्रयोग होता है, परन्तु विद्यालय में बच्चों को खड़ी बोली (हिन्दी) में बोलने के लिए प्रेरित किया जाता है।

बच्चों के अभिभावकों का प्रमुख व्यवसाय कृषि, मजदूरी व मिट्टी के बर्तन बनान है। अतः बच्चें विद्यालयी गतिविधियों में मिट्टी के खिलौने, गणेश उत्सव में गणेश की प्रतिमा को बहुत ही सुन्दर व सजीव रूप में देने में सक्षम हैं। विद्यालय में तकनीक द्वारा जैसे–यू–टयूब, ई–लर्निंग कक्षा, क्यू आर कोड का निरन्तर प्रयोग होने से बच्चों को इस विशेष क्षेत्र की जानकारी है। वहीं दूसरी ओर अनुसूचित जाति का समुदाय है जो आर्थिक व शैक्षिक रूप से पिछड़ा है। शैक्षणिक, सह–शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक गतिविधियों के द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास पर बल दिया जा रहा है।

शाला का सन्दर्भ : चुनौतियाँ

समुदाय का 70 प्रतिशत अनुसूचित जाति वर्ग जिनका मुख्य व्यवसाय मजदूरी व कृषि है। संसाधनों की कमी व विपरीत परिस्थितियों तथा भिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवेश से आने वाले बच्चों के सर्वांगीण विकास एवं शैक्षिक स्तर में सुधार के लिए कार्य करना एक कड़ी चुनौती थी, परन्तु मेरी सोच है कि

कोई भी लक्ष्य बड़ा नहीं।
जीता वही जो डरा नहीं।।

चुनौतियों को स्वीकार कर वंचित बच्चों के जीवन स्तर के उत्थान के लिए समर्पण के रूप में **''परिवर्तन एक संकल्प''** के विचार के साथ कार्य करना प्रारम्भ किया।

I- **बाल यौन शोषण :–**

वर्तमान परिस्थितियों में यहाँ सर्वत्र असुरक्षा अनुभव हो रही है, रक्षक ही भक्षक बन बैठे है, मानवता, पशुता में ढलती जा रही है, आये दिन बच्चों का यौन शोषण, हत्या और बलात्कार जैसे जघन्य अपराध की घटनाएं हो रही है। हर जगह काम पिपासुओं की बुरी नजर बच्चों की मासूमियत को तार–तार करने के लिए घूम द्वारा रही है। ऐसे में अब शिक्षकों एवं अभिभावकों का कर्तव्य केवल अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा व अच्छे संस्कार देने तक नहीं है, बल्कि बच्चों को यौन शिक्षा के साथ–साथ **'गुड टच एवं वैड टच'** के बारे में जागरूक करने की आवश्यकता है। ताकि वह अपनी सुरक्षा को लेकर सावधान हो सके, क्योंकि बच्चों को ये नहीं मालूम होता है उन्हें किस तरह छुआ जा रहा है और वह कारण है जो बच्चों के यौन शोषण के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार है।

बच्चों के मामले में अक्सर यह देखा जाता है कि विकृत मानसिकता वाले व्यक्ति बच्चे के करीब आने के लिए प्यार को उपकरण के रूप में इस्तेमाल करते हैं। प्यार के बहाने ये लोग बच्चों का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन छोटे बच्चे उनकी बुरी स्पर्श को पहचानने में असमर्थ होते हैं।

फिल्म अभिनेता, आमिर खान जी द्वारा प्रसारित कार्यक्रम **'सत्यमेव जयते'** में **'गुड टच ऐन बैड टच'** एपीसोड देखकर मेरे मन–मस्तिष्क में झंझावत हुआ कि किस प्रकार से बच्चों को समझाऊँ? क्योंकि जब शिक्षित समाज में इस तरह की घटनाएं दिन–प्रतिदिन हो रही हैं तो मेरे विद्यालय के बच्चे तो ग्रामीण परिवेश से हैं और उनके अभिभावक भी शैक्षिक

रूप से सक्षम नहीं हैं, और इतने जागरूक भी नहीं हैं कि बच्चों को यौन शोषण से सम्बन्धित जानकारी दे सकें। तभी मैने इस क्षेत्र में कार्य करने की योजना बनायी।

योजना बनाना

बाल यौन शोषण के प्रति बच्चों मे जागरूकता लाने के लिए मैंने सर्वप्रथम अपने शिक्षक साथियों के साथ विचार–विमर्श किया कि इसे मनोरंजक भयमुक्त एवं सरल व सहज ढंग से समझाया जाय जिससे बच्चे इसके सकारात्मक पक्ष को समझ सकें एवं उसका अनुप्रयोग अपने जीवन में कर सके।

चुनौतियाँ के समाधान की योजना

1. सर्वप्रथम मैंने बच्चों को **'गुड टच, बैड टच'** एवं सीक्रेट टच की जानकारी दी।

गुड टच :– माता–पिता, अभिभावकों या टीचर के द्वारा प्यार की झप्पी एवं शाबासी देना। उन्हें करके बताया गया कि जो स्पर्श आपको सुरक्षित एवं अच्छा लगे वो गुड टच है।

बैड टच :– बैड टच में चुटकी काटना, धक्का देना, पेंसिल चुभा देना। जिससे आपको परेशानी होती है।

सीक्रेट टच :– यह स्पर्श आपके लिए असहज एवं असुरक्षित है। इसे समझाने के लिए हमने 'डमी' (गुड्डा एवं गुड़िया) का प्रयोग किया जिससे बच्चों को सरल एवं सहज ढंग से **प्राइवेट पार्ट्स** के बारे में बताया।

(a) **प्राइवेट पार्ट्स** चार प्रकार के होते हैं :–

(i) होंठ

(ii) सीना

(iii) दोनों जाघों के बीच का भाग

(iv) कमर के नीचे का भाग

इसके साथ–साथ उन्हें यह भी बताया कि ये आपके शरीर का भाग है। अतः इसे छूने का केवल आपको अधिकार है।

(b). <u>**सुरक्षित क्षेत्र**</u> :– सुरक्षित जोन को टैब के माध्यम से और ब्लैकबोर्ड पर बनाकर समझाया।

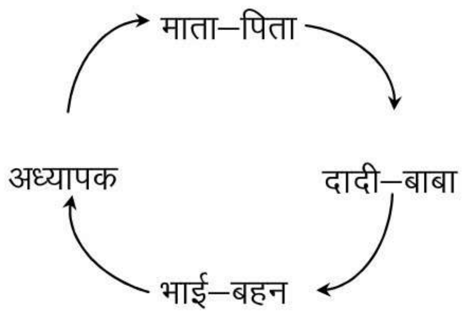

(c). 'सीक्रेट टच' को समझाते हुए बच्चों को यह बताया कि जब भी कोई व्यक्ति आपके प्राइवेट पार्ट्स को बुरा स्पर्श करता है तो आपको तुरन्त प्रतिक्रिया करनी है और पूरी ताकत से **'नहीं'** **'NO'** बोलना है।

(d) इसके बाद भी यदि पुनः बुरा स्पर्श होता है तो आपाके अपने सुरक्षित जोन में जाकर बताना है। इसे छुपान या डरना नहीं है क्योंकि आपने यह अपराध नहीं किया है।

(e) विषम परिस्थिति में आपको चाइल्ड हेल्पलाइन नम्बर 1098 पर डायल करके सूचना देनी है।

इस विषय को विभिन्न विधियों जैसे–आई0सी0टी0 का प्रयोग, स्वरचित कविता एवं कहानी के द्वारा बच्चों को समझाने का प्रयास किया जा रहा है।

'बाल यौन शोषण' पर मेरे द्वारा बहुत से कार्य किये गये है। विभिन्न विद्यालयों में जाकर मैंने बच्चों को समझाने का प्रयत्न किया है।

(i) दैनिक जागरण द्वारा कार्यक्रम "**बालयौन**

(ii) **शोषण – अब बस**" पर आयोजित सेमिनार में प्रतिभाग किया।

(iii) इनरव्हील क्लब ऑफ इलाहाबादनार्थ द्वारा नगर क्षेत्र के पुराना बालक कटरा में आयोजित कार्यक्रम में प्रस्तुतीकरण दिया।

(iv) 14 नवम्बर 2018 को श्री महाप्रभु स्कूल में दैनिक जागरण द्वारा आयोजित

कार्यक्रम में मुझे विशिष्ट अतिथि के रूप में **'गुड टच–बैड टच'** विषय पर स्कूल के लगभग 2500 बच्चो एवं अभिभावको को समझाने का अवसर प्राप्त हुआ। अभिभावकों की कार्यशाला में मैने उन्हे बताया कि बच्चों में आत्मविश्वाश पैदा करें उनसे खुलकर बात करें, जिससे बच्चे किसी भी दुर्भावना का शिकार ना हो और अपने **'मन की बात'** साझा कर सके।

,यदि आपका बच्चा शान्त या चुपचाप है तो उसका कारण समझने का प्रयत्न करे, बच्चों का समय दे प्यार करें और उनके मन मस्तिष्क में चल रहे झंझावातो को समझे।

बच्चो की सहभागिता :–

बच्चे **'गुड टच एवं बैड टच'** को समझते है एवं खुलकर बात करते है। बच्चों में किसी भी प्रकार की हिचकिचाहट व डर नही है। चाईल्ड हेल्प लाईन नम्बर की उपयोगिता को वो समझते है।Stakeholder :- इस कार्य को सफल बनाने में मुख्यतः विद्यालय के शिक्षकों एवं बच्चों का सहयोग सराहनीय था। मुख्य रूप से दैनिक जागरण टीम की मैं आभारी हूॅ। जिन्होने मुझे बच्चों के साथ साथ अभिभावको के समक्ष **'गुड टच एवं बैड टच'** जैसे संवेदनशील विषय पर प्रस्तुतिकरण करने का अवसर दिया।

II- कहानी सुनाना :–

साहित्य की सभी विद्याओं में कहानी सबसे पुरानी विद्या है। जनजीवन में यह सबसे अधिक लोकप्रिय है। पहले कहानी का उद्देश्य उपदेश देना और मनोरंजन करना माना जाता है। आज इसका लक्ष्य मानव जीवन की विभिन्न समस्याओं और संवेदनाओं को व्यक्त करना है।

भारत की सभ्यता और संस्कृति की विशेषता है विभिन्नता में एकता। विभिन्न प्रांतो की भिन्न भिन्न बोली, खान पान, रहन सहन से ही हम अनेक अस्तित्व से परिचित हो पाते है। विभिन्न जाति, धर्म समुदाय के लोग अपनी परम्परा सभ्यता को **कहानी के द्वारा** विभिन्न रूपों में जैसे गायन, नृत्य, नाटक, चित्रकारी के रूप में व्यक्त करते है। जैसे पांडवानी गायिका तीजनबाई, रामलीला द्वारा रामकथा, रासलीला द्वारा कृष्ण राधा के प्रेम प्रसंग, महाभारत के रूप में कौरव पांडवों का प्रसंग आदि।

हम सभी बाल्यावस्था से ही दादी और नानी से कहानियाँ सुनकर, नन्दन, चम्पक, चंदामामा, चाचा चौधरी और साबू आदि कॉमिक्स पढ़कर और टेलीविजन पर भी विभिन्न कार्यक्रमों जैसे जंगलबुक आर0के0 नारायण की मालगुडीडेज आदि कहानियों के सीरियल का देखकर ही बड़े हुए है।

मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि कहानी एक ऐसी विधा है जिसके माध्यम से हम बच्चों की भावनाओं को समझ सकते है एवं प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से रूचिपूर्ण ढंग से उन्हे समझा सकते है।

प्रविधियो, गतिविधियों एवं अन्य नवाचार के परिणाम

हम सभी शिक्षको ने मिलकर विद्यालय में **लर्निंग कार्नर** बनाया है जहाँ विभिन्न प्रकार की पुस्तकें है जिसे बच्चे बहुत मन से पढ़ते है। कक्षा शिक्षण में ही छोटी छोटी कहानियाँ बच्चो को सुनाती हूँ, और इन कहानियों से बच्चो की मनोरंजन के साथ साथ नीति का उपदेश भी प्राप्त होता है। प्रायः कहानियों में असत्य पर सत्य की विजय अन्याय पर न्याय की और अधर्म पर धर्म की विजय दिखाई जाती है।

कहानी सुनाते समय मैं बच्चों के भाव देखती हूँ सभी एकटक मेरा चेहरा देखते है और उसी के अनुसार प्रतिक्रिया करते है, कभी हँसते है और कभी दुखी हो जाते है। यह देखकर ऐसा लगता है जो संदेश बच्चो को मैं देना चाहती हूँ उन तक पहुँच रहा है।

बच्चे क्योकि ग्रामीण परिवेश से है तो अतः वहाँ अंधविश्वास और रूढ़िवादी विचारों से अभी भी लोग जकड़े है। भूत–प्रेत, झाड़–फूँक आदि का प्रचलन है। इसे दूर करने एवं समझाने के लिये हमने ई लर्निंग कक्षा द्वारा Krish, Trish and Balti boy नामक बच्चों का मनोरंजक प्रोग्राम दिखाया, जिससे उनके मन मस्तिष्क में बैठे भय एवं रूढ़िवादी सोच को दूर किया जा सके।

जैसा कि **प्रेमचन्द्र** ने कहानी की परिभाषा दी है "**कहानी वह ध्रुपद की तान है, जिससे गायक महफिल शुरू होते ही अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा दिखा देता है, जितना रातभर गाना सुनने से भी नही हो सकता"।**

कहानी सुनाने की प्रेरणा मुझे रेडियो कहानी कार श्री नीलेश मिश्रा जी, कहानीकार महक मिर्जा प्रभु एवं पश्चिम बंगला की गायिका एवं कहानीकार Parvathy Baul से मिली।

सत्र 2017–18 में SCERT द्वारा **"कहानी सुनाने की प्रतियोगिता"** का आयोजन हुआ जिसमें ब्लाक स्तरीय, जिला स्तरीय एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगिता हुयी। जिससे मेरा चयन हुआ।

मेरे विद्यालय में कुम्हार जाति जो कि मिट्टी के बर्तन बनाते है इस समुदाय से बच्चे आते है। मैने जो कहानी सुनायी उसका शीर्षक या **'मेहनत का महत्व'** और ये मिट्टी के कप की कहानी थी इसमें कुम्हार शिक्षक की भूमिका में और 'कप' को विद्यार्थी की भूमिका दी है। कहानी के द्वारा बच्चों को संदेश दिया गया कि किस प्रकार एक मिट्टी के लोंदे (विद्यार्थी) को कुम्हार रूपी गुरू ने चॉक पर चलाकर भट्टी में पकाकर, रंगकर एक सुन्दर कप बना दिया। जहाँ कुम्हार रूपी गुरू ने इतनी मेहनत की वहीं लोदें रूपी विद्यार्थी ने चॉक पर चलकर गर्म भट्टी (आवाँ) में पककर उफ तक नहीं किया और गुरू के कार्य में तन–मन से सहयोग किया तभी मिट्टी का लोंदा एक सुन्दर कप का रूप ले सका। इस प्रकार यदि हम मेहनत करेंगे तभी निखर कर समाज में अपनी पहचान बना सकेंगे। जिसे मेरे यूट्यूब चैनल Teaching for Change में देख सकते है, जो सभी को बहुत पसन्द आयी।

SCERT में तीन दिवसीय कार्यशाला हुयी जिसमें कहानीकार प्रफुल्लजोशी जी एवं श्रीमती शीला पाण्डेय जी से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। कार्यशाला में कहानी लिखने एवं सुनाने के लिये महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर परिचर्चा हुई जैसे–

1. कहानी का आरम्भ आकर्षक होना चाहिए।
2. कहानी में शब्दों का प्रयोग, बच्चो की आयु के अनुसार हो जिससे उसे भलीभाँति ग्रहण कर सके।
3. कहानी के प्रारम्भ से अन्त तक उत्सुकता बनी रहे ताकि पाठक या श्रोता का ध्यान लगा रहे।
4. भाषा रोचक व सरल हो तथा मुहावरे एवं लोकोत्तियों का प्रयोग हो।
5. कहानी का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए।
6. कहानी में बीच–बीच में संगीत भी होना चाहिए।

कार्यशाला में आये कहानी विशेषज्ञों से बहुत जानकारी हुई। बेसिक शिक्षा परिषद की कक्षा–7 की हिन्दी पाठ्य पुस्तक **'महान व्यक्तित्व'** में तीन कहानियों को **QR कोड** में मेरी आवाज में संकलित किया गया है। (लिंक)

https://diksha.gov.in/dial/G4D4JW

https://diksha.gov.in/dial/G448I9

https://diksha.gov.in/dial/FUUKMG

इस कार्य में मुझे राज्यस्तरीय पुरस्कार एंव सम्मान प्राप्त हुआ है। जिसकी मैं बहुत आभारी हूँ।

भविष्यकालीन योजनाएँ

विद्यालय के पास 'मुसहर' (एक प्रकार की जनजाति) समुदाय निवास करता है, जिनकी महिलाओं को जागरूक करके स्वावलम्बित बनाने की योजना है। यद्यपि 'ODF' योजना के अन्तर्गत शौचालय बन गये हैं परन्तु हमारी योजना है कि प्रत्येक घर में शौचालय हो।

विद्यालय के बच्चों को गर्मी की छुट्टियों में नवोदय प्रवेश परीक्षा के लिए प्रशिक्षित करना एवं कक्षा 8 के बाद जो बच्चे स्कूल छोड़ देते हैं (Drop Out) उन्हें सही मार्ग दर्शन देकर भविष्य की शिक्षा के लिए प्रेरित करना एवं कौशल विकास के अन्तर्गत व्यवसायिक प्रशिक्षण के लिए जागरूक करना, जिससे वो रोजगार के लिए योग्य हो सकें और एक कुशल नागरिक बनकर राष्ट्रहित के लिए कार्य करें।

जीवन में उसली उड़ान, अभी बाकी है,
हमारे इरादों का इम्तिहान अभी बाकी है
अभी तो नापी है, सिर्फ मुट्ठी भर जमीन,
अभी तो सारा आसमान बाकी है।

स्वयं की स्कूल लीडर के रूप में भूमिका

एक सफल लीडर के लिए डा0 ऐ0पी0जे अब्दुल कलाम जी की ये पंक्तियाँ मुझे बहुत प्रेरित करती हैं ....

''जब असफलता आती है तो एक लीडर उसकी पूरी जिम्मेदारी लेता है और जब सफलता मिलती है तो अपने साथियों के साथ बाँटता है।''

मैं सदैव इस बात का ध्यान रखती हूँ कि किसी की भावनाओं को ठेस न पहुँचे एवं सब मिलजुलकर कार्य करें। सभी की मेहनत और लगन से ही आज विद्यालय में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। जहाँ बच्चे टाट–पट्टी पर बैठते थे शैक्षिक स्तर भी न्यून था, सभी सुख–सुविधाओं से वंचित थे, आज डेस्कबेन्च, खेलकूद का सामान, पुस्तकालय एवं E-लर्निंग, कक्षा में पढ़ते है। इसके लिए बस ये पंक्ति ही लिखना चाहूँगी...............

किस्मत में लिखी हर मुश्किल टल जाती है
यदि हो हौसले बुलंद, तो मंजिल मिल ही जाती है
सिर उठाकर अगर आसमान को देखोगे बार–बार
तो गगन को छूने की प्रेरणा मिल ही जाती है।

कार्य करने एवं सफलता मिलने से आत्मविश्वास बढ़ता है, जब कभी भी मुझे सेमिनार या वर्कशॉप में प्रतिभाग करने का अवसर मिलता है तो उपस्थित प्रतिभागियों से कुछ न कुछ सीखने की जिजीविषा रहती है। जिससे विद्यालय में और सकारात्मक परिवर्तन कर सकूँ। जैसा की डा0 कलाम ने कहा है –

''सपना वह नहीं जो आप नींद में देखते है यह तो एक ऐसी चीज जो आपको नींद ही नहीं आने देती।''

मैं भी अपने सपने को साकार करने के लिए अथक परिश्रम करती हूँ, और मेरा यही प्रयास है कि अपने जीवन में इस आर्थिक व सामाजिक रूप से पिछड़े व वंचित समूह के बच्चों का जीवन सुधार कर उन्हें एक सफल दिशा दे सकूँ।